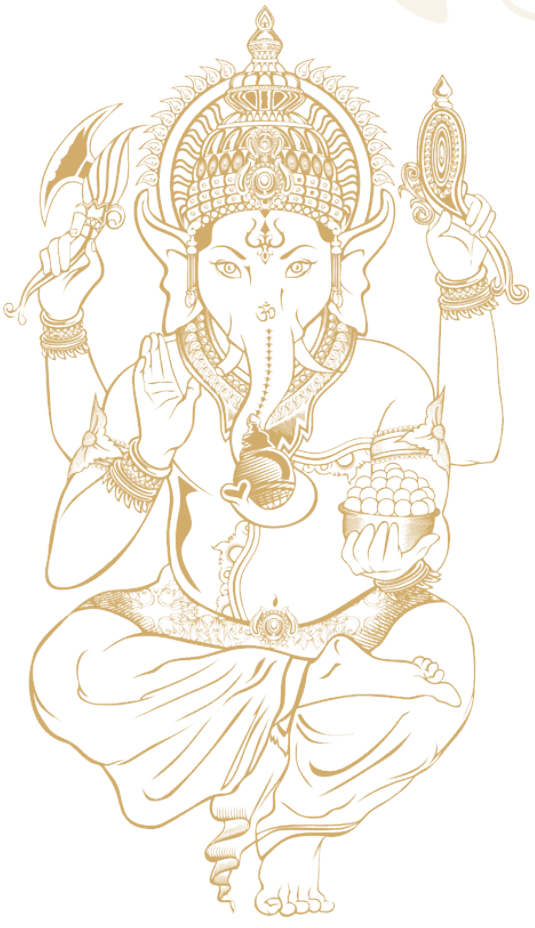

Mr.

01 Aug 2025

08:40 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119091201**

तिथि 01/08/2025 **समय** 08:40:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:56
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:58:49 घं
वेलान्तर	00:06:21 घं
सूर्योदय	05:42:34 घं
सूर्यास्त	19:11:48 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	श्रावण
पक्ष	शुक्ल
तिथि	8
नक्षत्र	स्वाति
योग	शुभ
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रे-रेवती
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

राहु 12वर्ष 8मा 3दि

राहु

01/08/2025
05/04/2038

	00/00/0000
	01/08/2025
शनि	17/03/2028
बुध	05/10/2030
केतु	23/10/2031
शुक्र	23/10/2034
सूर्य	17/09/2035
चन्द्र	17/03/2037
मंगल	05/04/2038

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 4मा 27दि

पिंगला

01/08/2025
28/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	01/08/2025
भद्रिका	08/10/2025
उल्का	07/02/2026
सिद्धा	29/06/2026
संकटा	08/12/2026
मंगला	28/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:19:33	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			14:56:00	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	मित्र राशि	1.58	अमात्य	पितृ	विपत
चंद्र			10:36:36	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	सम राशि	0.98	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			02:10:00	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि	0.97	कलत्र	भ्रातृ	वध
बुध	व	अ	14:41:14	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	शत्रु राशि	1.14	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			17:31:32	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	1.18	आत्मा	धन	जन्म
शुक्र			06:54:14	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	मित्र राशि	1.12	ज्ञाति	कलत्र	जन्म
शनि	व		07:25:09	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	1.12	पुत्र	आयु	विपत
राहु			24:51:19	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			24:51:19	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

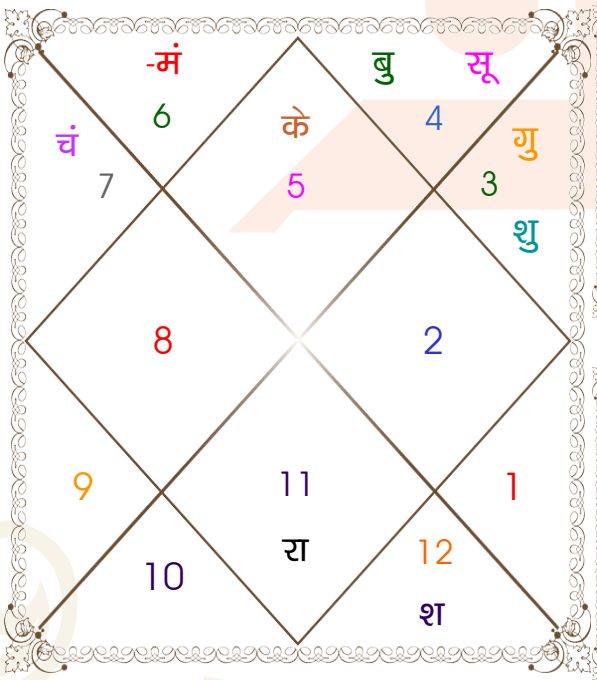

चन्द्र कुंडली

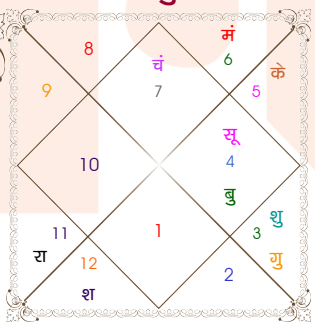

नवमांश कुंडली

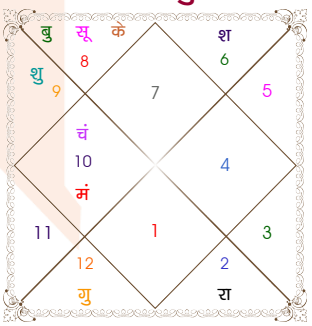

सर्वाष्टकवर्ग

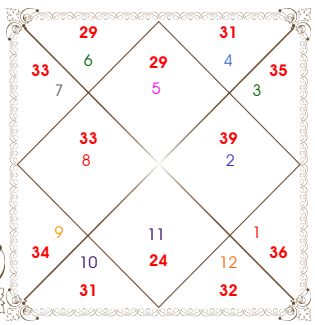

दशमांश कुंडली

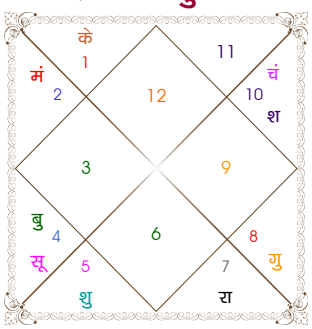

Dadieya occult sciences
Nearby Dabchick tourist place hodal
+919468279936
pankajkumar.dadieya@gmail.com

नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "रे" से प्रारम्भ होगा।

आप स्वभाव से ही सहनशील होंगे तथा सुख दुःख का समान रूप से अनुभव करेंगे। आप प्रसन्नता के अवसर पर अनावश्यक प्रसन्नता तथा दुःख के अवसर पर अनावश्यक दुःख प्रदर्शित नहीं करेंगे। वाणिज्य कर्म के प्रति आप विशेष रूचि प्रदर्शित करेंगे तथा अपनी आजीविका यापन में इसी कार्य को वरीयता प्रदान करेंगे। आप कृपाकारक अर्थात् मन से दयालु होंगे तथा कृपापात्र लोगों के प्रति हमेशा दयाभाव प्रदर्शित करेंगे। इससे अन्य सामाजिक जन आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप प्रारम्भ से ही धामिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा नियमपूर्वक धर्म का आचरण करने में सदैव तत्पर रहेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

देवताओं तथा ब्राहमणों के आप प्रिय कार्य करने वाले होंगे अर्थात् धर्मसंबंधी कार्यों को करते रहेंगे तथा इनके प्रति आपके हृदय में अगाध श्रद्धा की भावना विद्यमान रहेगी। संसार में आप विविध प्रकार के सुख ऐश्वर्य एवं वैभव का पूर्ण रूप से उपभोग करने में सफल दौरान आपकी- पास धन की कभी भी कमी नहीं होगी इससे आप सर्वदा परिपूर्ण रहेंगे। लेकिन आपकी बुद्धि मध्यम ही रहेंगी तथा तीक्ष्णता की सामान्यतया न्यूनता ही परिलक्षित होगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आप देखने में अत्यन्त ही रूपवान पुरूष होंगे तथा आपका मुखमंडल पूर्ण तेज से युक्त रहेगा। समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा। इससे आपका मन हमेशा खुश रहेगा। साथ ही आप सरकारी धन को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक आप ज्ञानार्जन करने में प्रयत्नशील रहेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में यश प्राप्त करेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी परन्तु अपने सामाजिक संबंधो की विस्तृता के कारण आप अन्य महिलाओं से भी संबंध स्थापित करेंगे तथा इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। आपका स्वभाव सुशील तथा विनम्रता से युक्त रहेगा। देवताओं के आप भक्त होगे पर प्रकृति आपकी कृपणता से युक्त रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका मुख तथा शरीर सुन्दर होगा। आपके नेत्र विशाल होंगे तथा नाक भी ऊंची होगी। आपके पास हमेशा विभिन्न प्रकार के वाहन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक आप इनका उपभोग करेंगे। आपके सामाजिक संबंध विस्तृत रहेगे तथा अन्य महिलाओं से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। भूमि तथा वाहन आदि से आप पूर्ण बल तथा लाभ प्राप्त करने वाले होंगे। आप एक प्रतापी पुरूष होंगे तथा समाज में अपने पराक्रम के द्वारा पूर्ण प्रभाव को स्पष्ट करने में हमेशा समर्थ रहेंगे। धन ऐश्वर्य एवं वैभव से आप सम्पूर्ण रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इनका अपने जीवन काल में उपभोग करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण वश में रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यकलापों को उससे परामर्श लिए बिना सम्पन्न करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। साथ ही कार्यों को करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के आप प्रिय भक्त होंगे। साथ ही धनधान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आपमें विद्यमान रहेगी तथा बन्धु वर्ग के उपकार संबंधी कार्यों को आप हमेशा करते रहेंगे तथा उन्हें अपनी तरफ से कुछ न कुछ प्रदान करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विकमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता ब्राहमण तथा सज्जनों की सेवा में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा पांडित्य पूर्ण पवित्र जीवन निर्वाह करते रहेंगे। आपकी भ्रमण में अधिक रूचि रहेगी तथा आपका काफी समय यात्रादि में व्यतीत होगा। आप खरीदने बेचने के कार्य में अत्यन्त ही दक्ष होंगे। आप अपने बन्धु तथा संबंधियों की मन से भलाई करेंगे परन्तु बाद में इन्हीं लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा धैर्यपूर्वक ही अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप एक न्याय प्रिय व्यक्ति होंगे तथा इस बात की आपकी सभी लोग प्रशंसा करेंगे तथा आपकी न्याय के प्रति ईमानदारी को देखते हुए आपको अपने वाद विवादों को सुलझाने के लिए मध्यस्थ या पंच बनाएंगे। आप भी अपनी इस जिम्मेदारी का ईमानदारी के साथ पूर्ण पालन करेंगे तथा किसी को शिकायत का अवसर प्रदान नहीं करेंगे। आपकी पुत्र संतति भी अल्प संख्या में होगी तथा भाग्योदय भी देर से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका कद मध्यम रहेगा तथा राज्य के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने में आप निपुण होंगे। इनसे आप पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अधिक तथा अनावश्यक बोलेंगे अतः आपके प्रभाव में कमी होगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वो।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप प्रतिकूल समय में अपने कोध का प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको दुःख या कष्ट की प्राप्ति होगी। आप अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय वाणी को बोलेंगे जिससे अन्य

लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका आप प्रदर्शन करेंगे। साथ ही आपके नेत्रों में भी चंचलता का भाव भी विद्य मान रहेगा परन्तु जीवन में आर्थिक स्थिति आपकी अस्थिर रहेगी एवं कभी अत्याधिक धन प्राप्त होगा तो कभी अति अल्प। इससे आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी। आप घर के अन्दर बलवान तथा बाहर निर्बलता की अनुभूति करेंगे। मित्र एवं बन्धुओं के प्रति आप स्नेहशील रहेंगे एवं विदेश में भी निवास कर सकेंगे। आपकी व्यापारिक कार्यों में रूचि रहेगी तथा दक्षतापूर्वक अपने कार्यों को पूर्ण करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप नाना प्रकार के वाहनों से हमेशा युक्त रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। स्त्री वर्ग के आप अत्यन्त प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। जीवन में आप बहुत धनवैभव से युक्त होकर इसका उपभोग करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

आपका जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आपकी वाणी अत्यन्त ही सुकोमल तथा मधुरता से युक्त रहेगी जो लोगों को प्रसन्नता प्रदान करेंगी। आपकी बुद्धि सरल एवं निर्मल होगी। किसी भी प्रकार के छल से दूर रहेंगे। अपनी बातों को आप सादगी पूर्ण ढंग से प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य जनों की बातों को भी सादगी से ही ग्रहण करेंगे। आप अल्प मात्रा में भोजन करने के शौकीन रहेंगे गुणों के विषय में आपको ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आदर्श गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन वैभव से भी आप आजीवन सुसम्पन्न रहेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा साथ ही दानशीलता की ओर भी आपकी प्रवृति रहेगी। आप बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी आपको अत्यन्त पसन्द रहेगी। भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगे। आप अपने समाज में एक आदरणीय विद्वान के रूप में यश की प्राप्ति करेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

महिष योनि में जन्म लेने के कारण आप वादविवाद आदि में अधिकांश रूप से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप स्वयं भी साहसी एवं योद्धा होंगे तथा साहसिक कार्यों को करने की ओर स्वभाव से ही प्रवृत रहेंगे। आपकी संतति अधिक संख्या में होगी। आप के शरीर में वायु की प्रधानता होगी। धार्मिक कार्यों में भी आपकी रूचि समयानुसार जागृत रहेगी परन्तु बुद्धि में तीव्रता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि ही आपकी रहेगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार

आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग, तैतिलकरण, गुरुवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण आदि कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरुवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में आपको सफलता प्राप्त नही हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शारीरिक व्याकुलता में भी न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभप्रभावों में वृद्धि होगी। कत शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 1700 जप

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।